इकाई 2 : समसामयिक मुद्दे

पाठ 2.1 : मैं मजदूर हूँ
पाठ 2.2 : जनतंत्र का जन्म
पाठ 2.3 : अपनी–अपनी बीमारी

इकाई 2 समसामयिक मुद्दे

हमारे आस–पास सामाजिक–राजनैतिक क्षेत्र के ऐसे कई समसामयिक मुद्दे हैं जिन पर हमें पढ़ने, विचार विमर्श करने और एक चेतना विकसित करने की आवश्यकता है। हम रोजमर्रा में ऐसे विषयों से रूबरू होते रहते हैं और कई बार हम उनकी ओर सचेत रूप से ध्यान नहीं देते हैं या कई बार हमारे पास वह नजरिया भी नहीं होता है जिनके माध्यम से उनका विश्लेषण कर पाएँ। इस इकाई में यह प्रयास किया गया है कि विद्यार्थियों में वह नजरिया व समालोचनात्मक दृष्टि विकसित हो जिससे वे सामाजिक–राजनैतिक यथार्थ को समझ पाएँ।

मैं मजदूर हूँ एक विचारात्मक लेख है जिसमें लेखक ने मजदूर वर्ग की कहानी को आत्मकथात्मक शैली में लिखा है और यह बताने का प्रयास किया है कि इस दुनिया के वर्तमान स्वरुप तक विकसित होने की यात्रा में मजदूर वर्ग की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है लेकिन मजदूरों की अपनी जिन्दगी पहले की तरह आज भी अभावग्रस्त है।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता **जनतंत्र का जन्म** 1950 में संविधान लागू होने के समय लिखी गई थी। यह कविता आमजन में निहित शक्ति से हमारा परिचय करवाती है और आमजनता के हाथ में शासन सूत्र सौंप देने का आह्वान करती है।

अपनी–अपनी बीमारी हरिशंकर परसाई जी की व्यंग्य रचना है। इस रचना में समाज में लोगों के अलग–अलग प्रकार के व्यवहार को उजागर करने का प्रयास हुआ है। समाज में ऐसे लोग भी हैं जो वास्तविक दुखों से दुखी हैं, लेकिन ऐसे लोग भी हैं जो सम्पन्नता से उपजे दुखों या यह कहें कि और अधिक की लालसा से दुखी हैं और चाहते हैं कि दूसरे अपने वास्तविक दुखों को भूलकर उनके छद्म दुखों में दुखी हों।

EAFB7I

मैं मजदूर हूँ

डॉ. भगवत शरण उपाध्याय

जीवन परिचय

डॉ. भगवत शरण उपाध्याय का जन्म सन् 1910 में उत्तर प्रदेश, के बलिया जिले में उजियारपुर नामक स्थान पर हुआ। इन्होंने संस्कृत, हिन्दी साहित्य, इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व का गहन अध्ययन किया। हिन्दी–साहित्य के ललित निबंधकारों में उनका स्थान महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट है। आपने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की शोध पत्रिका का संपादन किया तथा हिन्दी विश्वकोश संपादक मंडल के सदस्य भी रहे। ये मारीशस में भारत के राजदूत भी रहे। भारतीय संस्कृति पर देश–विदेश में दिए गए इनके व्याख्यान चिर–संग्रहणीय हैं। इनकी भाषा शैली तत्सम् शब्दों से युक्त साहित्यिक खड़ी बोली है। आपने विवेचनात्मक भावुकतापूर्ण, चित्रात्मक भाषा का प्रयोग तथा कहीं–कहीं रेखाचित्र शैली का प्रयोग किया है। ***विश्व साहित्य की रूपरेखा, साहित्य और कला, कालीदास का भारत, कादम्बरी, ठूंठा आम, बुद्ध वैभव, सागर की लहरों पर, इतिहास साक्षी है*** *आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।*

मैं मजदूर हूँ, जीवनबद्ध श्रम शक्ति की इकाई।

मैं मेहनतकश मजदूर हूँ। आदमी के बनैलेपन से लेकर आज की शिष्ट सभ्यता तक की सीढ़ियों पर मेरे हथौड़े की चोट है। जमाने ने करवट ली है पर मैंने कभी जमीन से पीठ नहीं लगाई, सुस्ताने के लिए कभी फावड़े नहीं टिकाये। मेरे बाजू पर ज़माना टिका है, घुटनों पर अलकस दम तोड़ती है। मेरे कंधों पर भूमंडल का भार है, उसे उठाने वाले एटलस के साथ पर मैं वो हूँ कि कभी गरदन नहीं मोड़ता, कंधे नहीं डालता, उन्हें कभी बदलता तक नहीं।

कंधे डाल दूँ तो गजब हो जाए, दुनिया लड़खड़ाकर गिर पड़े, जमाने का दौर बंद हो जाए। पर मैं कंधे नहीं डालता, न डालूँगा। मैंने निरन्तर निर्माण किया है, विध्वंस न करूँगा। यदि करना हुआ तो पुनर्निर्माण करूँगा जिसके लिए मुझे थकान नहीं महसूस होती, कभी अलकस नहीं लगती, रोआँ–रोआँ फड़कता रहता है।

मेरे निर्माण की परिधि की व्यापकता अनंत है, उदयाचल से अस्ताचल तक, क्षितिज के छोरों तक। हजारों वर्ष पहले कलयुग भी जब अभी अंतराल के गर्भ में था, मैंने नदियों के बहाव रोक दिए, बहाव जो अभी ताजा थे, प्रखर प्रकृति वेग से प्रेरित। बहाव रोक कर सविस्तृत ह्रद बनाए, जिन पर पर्जन्य विरहित भूमि की उर्वरा शक्ति

अवलंबित हुई। बढ़ते हुए समुन्दर का मैंने जल सुखाया, दलदलों को ठोस जमीन का जामा पहनाया और उन पर फसलों की हरी धानी क्यारियाँ दौड़ाई।

कश्मीर का नाम लेते ही हृदय में जो आनंद की लहरें उठने लगती हैं उसकी नम दलदल भरी भूमि किसने सौन्दर्य से रँगी? किसने झेलम के तटवर्ती आकाश को सुरभि बोझिल वायु से मदहोश किया? किसने उसके केसर की फैली क्यारियों में जादू की मिट्टी डाली? कल्हण की कलम से पूछो, किसने–किसने ?

दिन सोता था, रात सोती थी, पर मैं जागता था, जब नीलनद की धारा छाती पर चट्टान ढोती थी, दखिनी पहाड़ी में मेरी चट्टान। इन चट्टानों को मैंने नील की सबल छाती से उठाकर अपनी छाती पर रखा, अपने बाजूओं पर, कंधों पर, गरदन पर और चढ़ा दिया पाँच सौ फुट ऊपर आसमान की छाती छेद, गीजा और सक्कारा के मैदानों में, अपनी, जिन्दा छातियों से, इसलिए कि मुर्दा छातियाँ उस धूप से भूनी बालू में पिरामिडों की छाया में चिर निद्रा में सोएँ।

मैंने पहाड़ काटा, चट्टानें खोदकर ताँबा निकाला, सोना, चाँदी, लोहा, कोयला, हीरा। पाताल में घुसकर जब तपता दिन, नरक की रातों की अँधियारी लिए उन खानों में उतरता, मैं पत्थर काटता होता, अपने मालिकों के लिए था। कोलार की खानों से अमरीका की नई दुनिया तक। जमीन की छाती फाड़–फाड़कर मैंने चमकता, लोहे सा कठोर हीरा निकाला और दक्षिणी अफ्रीका में आज भी निकाले जा रहा हूँ पर उसकी चमक के नीचे मेरी काली अँधियारी जिन्दगी है।

मेरी खोदी जमीन को घेरे शेर से खूँखार कुत्ते खड़े रहते हैं, मुझे घूरते, मेरी एक–एक हरकत पर छलाँग मारते । अगर मैं अपनी जगह बुत बनकर खड़ा न रहा होता तो पीठ फेरते ही पिंडलियाँ उनके मुँह में होती और उनके घेरे से बाहर निकलते ही वह अमानुष अपमान जिससे अंतर खुलकर चमक जाए। मैं हीरा निकालता हूँ।

रोम का वह कोलोसियम, मैंने अपने हाथों खड़ा किया, जैसे कभी एथेन्स में अरीना का निर्माण किया था जहाँ मेरे–से गरीबों को श्रीमानों की दृष्टि सुख के लिए शेरों से लड़ना होता था। वैसे ही स्पेन के वे खूनी अखाड़े भी जहाँ लड़कों को साँड़ों से मौत की बाजी लगानी होती थी।

बाबा आदम के वनों को काट मैंने पत्थर की सी जमीन खोदकर नरम कर डाली। उसे जोत बोकर हरा कर दिया। विजयों से लौटे हुए रोमन जनरलों की प्रांतीय भूमि, मीलों फैले खेत मैंने बोए–काटे, सामंतों की दुनिया मैंने बसाई जिनकी गहराइयों में आदमी को भूखे शेर की भाँति कठघरों के पीछे रखा जाता था।

अफ्रीका के जंगलों से बनैली हालत में डाके, चोरी, साजिश द्वारा मैं खींच ले जाया गया एक दूर की अनजानी दुनिया में, समुंदर पार। पर मेरे लिए स्वदेश–विदेश की परिपाटी न थी। मैंने वहां भी गोरी दुनिया का पेट भरा, अपना पेट काटकर, संसार को अघा देने वाली उपज के बीच भी भूखा रहकर। फिर वहीं, उनके लिए आसमान चूमने वाली इमारतें खड़ी कीं, जहाँ एक–एक गाँव–नगर की संख्या बसी, मेरी झोपड़ियों से घृणा करने वाली दुनिया।

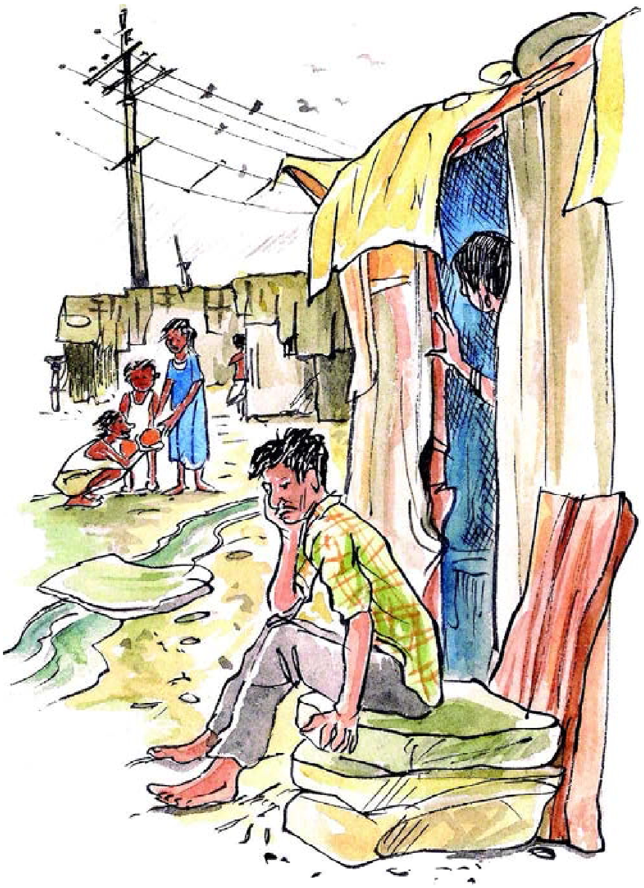

मैं ज़मीन को खोदकर, उसे जोत–बोकर सोना उगलने पर मजबूर करता था, वह सोना खुद मेरे लिए न था। मेरे लिए सोना आग था जिसे छूकर मुझे शूल की नोक पर चलना होता। मुझे उस फसल को काटकर, दा–उसाकर, राशि कर देना था पर उसका एक दाना भी छूना मेरे लिए मौत का परवाना था, तिल–तिल करने का, उन पीड़ाओं का जिनके लिए मनुष्य की मेधा ने एक से एक जतन प्रस्तुत किये थे। हाँ, मुझे उस कटे खेत की ज़मीन पर अब चिड़ियों की भाँति फिरने का अधिकार था जहाँ कभी कोड़ों की चोट सीने पर झेलते हुए मैंने अन्न की राशि खड़ी की थी कि मैं अपना आहार, मिट्टी में पड़े कणों को चुन लूँ। तब कणाद का तप मैंने पूरा किया।

हाँ, मैं उस जमीन के साथ बँधा जरूर था। उस ज़मीन की तरह मैं भी निरीह था, ज़मीन बेची जाती थी, मैं भी उसी के साथ, मय जानवरों के बिक जाता था। न ज़मीन को अपनी उपज खाने का हक था, न मुझे। प्राचीन काल से ही मेरी संज्ञा घर के मवेशियों की थी। प्राचीन ऋषि तक ने जानवरों की ही भाँति मुझ पर दया करने की ताकीद की थी। गृहिणी को ऋषि ने मेरे प्रति करूण होने की हिदायत देते हुए चौपायों के साथ रखा, उसे गृह के सभी जनों के साथ दोपायों–चौपायों की साम्राज्ञी होने का आशीर्वाद दिया–साम्राज्ञी द्विपदश्चतुष्पदः।

जंगल काटकर मैंने गाँव खड़े किए, कस्बे और नगर। मैं भूमि के साथ बिकता रहा। फिर धीरे–धीरे मैंने विशाल जनसंकुल नगर बनाए जिनमें कारखानों– मिलों का दैत्य कोलाहल के साथ धुआँ उगलने लगा। उनकी चिमनियों की छाया में रात–दिन मैं पसीना बहाता रहा। जब मशीन की चपेट में आकर मैं अपाहिज हो जाता, मेरा नाम रजिस्टर से खारिज कर दिया जाता। जब मैं उसकी चोट से गिरकर फिर न उठ पाता तब सड़क के कूड़ों में डाल दिया जाता। मेरी मृत्यु की जवाबदेही किसी की न थी, न मेरे बाल बच्चों के प्रति, न मालिकों की अपनी सरकार के प्रति। मॉन्टेस्क्यू* और मिल* लिखते ही रह गए।

मेरे बाल–बच्चे। उनके न घर थे, न द्वार। मिल की दीवारों की आड़, धुएँ के बादलों की घनी छाया और टाट–फूस–टिन से घिरी मेरी दुनिया जिसमें मैं ही सपरिवार न था, मेरे–से अनेक अभागे थे। और वहाँ का पापमय घिनौना जीवन, शर्मनाक नरक के कीड़ा का। उधर ऊँची दुनिया में, संसदों में, पाप के विरूद्ध कानून बनते रहे और कानून बनाने वालों की इधर की दुनिया में उनके कानूनों को चरितार्थ करते हम कृतकृत्य होते रहे। चारों ओर अँधेरा था, घरौंदों के पीछे, उन मकान कहलाने वाले घरौंदों के जहाँ दिन–रात की मजदूरी से थका–माँदा जीवन बिना लहराए टकराता और टकरा–टकराकर टूट जाता था और ये घरौंदे उसी तेजी से गला–पचा जीवन उगलते थे जिस तेजी से दीवारों के पीछे कारखाने में तैयार माल।

बैलगाड़ी से रथ बने, रथ से महारथ। उधर हमारी मिलों ने क्रांति की और हमने भाप से चलने वाले इंजन गढ़ दिए, इंजन जो जमीन पर दौड़ते थे, पानी पर तैरते थे। बैलगाड़ी रेल बनी और नाव–जहाज आसमान चूमती लहरों पर तूफ़ानों में नाचने लगे। पर मैं वहीं का वहीं रह गया।

मैंने जैसे मोटर–रेल से जमीन नापी थी वैसे ही अब अपने ही बनाए हवाई जहाजों से बाजों के छक्के छुड़ाने लगा पर जैसे मैं उनका कोई नहीं। भला उनके भीतर बैठने वालों से मेरा क्या वास्ता? नाव चलाने वाला मल्लाह नाव पर, उसे अपना कह दिनभर बैठ लेता है, हलवाई अपनी बनाई मिठाई को जब–तब चख लेता है पर मैं अपनी ही जोड़ी बनाई मोटर को, जहाज को, क्या अपना या उनका कह एक मिनिट को भी भोग सकता हूँ?

इनके लिए मैं पहाड़ों से लोहा, कोयला, टिन खोदता हूँ, तेल और पेट्रोल जिनके विस्फोट से अनेक बार मुझ जैसों की दुनिया पलट जाती है। जिनके लिए धर्म का झंडा फहराने वाले, जालफरेब करते हैं, कानून बनाते हैं, कानूनी शर्तनामों के नाम पर खूनी लड़ाइयाँ लड़ते हैं।

खूनी लड़ाइयाँ। इनके लिए भी मैं अपना खून–पसीना एक करता हूँ। लड़ाइयाँ धर्म की हैं, अधर्म की हैं, गुस्से और बर्दाश्त की हैं, हक और नाहक की हैं, लड़ाई और अमन की हैं, दोनों को मिटा देने की भी हैं, और कई किस्म की हैं जैसा उनकी किस्म–किस्म की परिभाषा बनाने वाले कहते है। मैं नहीं जानता उनकी परिभाषाएँ। पिस्सू और खटमल तक की जानें निकलते देख एक बार घबरा उठनेवाला मैं दानव की भाँति दिन–रात चलती मशीनों से संहार के साधन सिरजाता जा रहा हूँ क्योंकि मेरा कारखाना हथियारों का है, तोप–बंदूकों का, गोले–बारूद का, बम का।

पिस्सू–खटमल की चोट पर आँसू बहाने वाला मैं आखिर चींटी को चीनी चटाने वालों, कृपालु पिता के नाम पर सेमिनार चलाने वालों का नौकर ही तो हूँ। मुझे इससे क्या कि जिन मशीनों, बन्दुकों, तोपों, जहाजों के टुकड़े–हिस्से बनाता हूँ, वे एक दिन मुझसे ही हाड़–माँस के असंख्य जनों को उड़ा देंगे।सच, इससे मुझे क्या ? मैं तो तेली का बैल हूँ, मुझे कहीं भी नाथ दो, मैं चलता ही जाऊँगा, उन्हीं मशीनों की तरह जिन्हें चलाने वालों के इशारों पर चलना होता है।

---

*मॉन्टेस्क्यू : मॉन्टेस्क्यू फ्रांस के एक राजनैतिक विचारक, न्यायविद तथा उपन्यासकार थे। उन्होंने शक्तियों के पृथक्करण का सिद्धान्त दिया। वे फ्रांस में ज्ञानोदय (एनलाइटेनमेन्ट) के प्रख्यात प्रतिनिधि माने जाते हैं।

*मिल : जे.एस. मिल एक सामाजिक दार्शनिक थे। ये व्यक्तिगत अधिकारों व स्वतंत्रता के पक्षधर थे। ऑन लिबर्टी इनकी प्रमुख पुस्तक थी।

सुंदर आसमान पर पुल बाँधने वाला मैं अपनी कुव्वत आप नहीं जानता। एक बार भी मैं नहीं सोचता कि मेरे जिन हाथों में भरे मैदानों को बगैर खून बहाए सुला देने का जादू है उनमें मसीहा का भी असर है। काश, मैं इसे समझ लेता। काश, मैं इसके राज को अपने सामने बिखरे मृत्यु के इन साधनों को सिरजते इन्हीं की भाँति साफ देख लेता।

संसार आसमान के छोरों तक फैला हुआ है। धरती का विस्तार क्षितिज के पार तक वैसा ही व्यापक है, जैसा आसमान। रत्नाकर का सौन्दर्य उतना ही अमित है जितना वसुंधरा का और उनके मंथन से शहरों में समृद्धि भरी है, परन्तु वह मेरे लिए क्यों नहीं हैं? मैं पूछता हूँ। मुझमें कभी दानव की शक्ति थी मेरे इस मानव की मज्जा में, मेरी इन शिराओं में फौलाद के तारों की जकड़ थी, पर आज इतना निःसत्व मैं क्यों हूँ, इतना नगण्य और नंगा क्यों?

दुनिया में क्या नहीं? कौन–सी चीज मैंने अपने हाथों पैदा नहीं की? मेरे सहारे कारखाने अमित मात्रा में माल उगलते जा रहे है। मैं तृण से ताड़ बनाता हूँ, तिल से पहाड़, नगर को ढो सकने वाले जहाजों से लेकर सुई तक कोई महान और अदनी चीज नहीं जो मेरे स्पर्श के जादू से जीवन धारण न कर लेती हो। पर यह सब कुछ मेरे लिए क्यों नहीं? मैं इनमें से तिनका तक भी नहीं ले पाता। मैं भूखा और नंगा हूँ पर क्या ये मिलें जिनमें मैं खाने–पहनने का अपार सामान तैयार कर रहा हूँ, मेरा पेट नहीं भर सकतीं, तन नहीं ढंक सकतीं? इसका उत्तर भला कौन देगा, इन्हें जो बनाता है वह या जिनके लिए बनाता हूँ वे?

शब्दार्थ

जीवनबद्ध – जीवन से बँधा हुआ; **कंधे डालना** – पराजय स्वीकार करना; **अवलम्बित** – निर्भर; **कृत होना** – आभारी होना; **कुव्वत** – शक्ति या ताकत; **बनैलापन** – जंगलीपन; **अलकस** – आलस्य; **बुत** – मूर्ति; **कोलोसियम** – रोम का नाट्यगृह; **पर्जन्य** – बादल; **मज्जा** – हड्डी के भीतर भरा हुआ द्रव पदार्थ; **क्षितिज** – जहाँ धरती और आकाश मिले हुए दिखाई दे; **कणाद** – एक ऋषि जो भूमि पर गिरे अन्न के कणों को एकत्र कर स्वयं के भोजन की व्यवस्था करते थे।

अभ्यास

पाठ से

1. मजदूरों के प्रति सहानुभूति क्यों रखनी चाहिए?
2. मजदूर के पारिवारिक जीवन का हाल कैसा होता है? पाठ के आधार पर लिखिए।
3. 'दुनिया में क्या नहीं? कौन सी चीज मैंने अपने हाथों पैदा नहीं की?' इस कथन को ध्यान में रखकर मजदूरों के द्वारा किए गए निर्माण कार्यों को अपने शब्दों में लिखिए?
4. ''दिन सोता था रात सोती थी, पर मैं जागता था।'' का आशय क्या है?

5. पाठ में से उन पंक्तियों को छाँटकर लिखिए जिनमें मजदूरों की विवशता दिखाई देती है?

6. निर्माण के प्रति मजदूरों की निरंतर प्रतिबद्धता किन–किन बातों में जाहिर होती है?

EAP796

पाठ से आगे

1. मजदूर नहीं होते तो हमारी दुनिया के विकास कार्यों का क्या होता? कल्पना कर अपने शब्दों में लिखिए।

2. आज भी देश–विदेशों में कई जगहों पर जानवरों की लड़ाइयों का आयोजन किया जाता है। इन लड़ाइयों में कई बार जानवरों व इंसानों की मृत्यु तक हो जाती है। क्या इस प्रकार के आयोजन उचित है? अपने विचार तर्क सहित दीजिए।

3. फैक्ट्री में काम करते हुए घायल/दुर्घटनाग्रस्त (दिव्यांग) मजदूरों के प्रति मालिकों की क्या–क्या जिम्मेदारियाँ होनी चाहिए?

4. कश्मीर का नाम सुनते ही आपके मन में उसकी क्या–क्या छवियाँ उभरती हैं? चर्चा करके लिखिए।

5. प्राचीन काल में गृहिणियों को ऋषियों द्वारा दी जाने वाली हिदायत 'साम्राज्ञी द्विपदश्चतुष्पदः' में मजदूरों (इंसानों) की साम्यता पशुओं से करना क्या सही था? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

6. 'पिस्सू और खटमल तक की जानें निकलते देखकर एक बार घबरा उठनेवाला मैं दानव की भाँति दिन–रात चलती मशीनों से संहार के साधन सिरजाता जा रहा हूँ; क्योंकि मेरा कारखाना हथियारों का है, तोप–बँदूकों का, गोले–बारूद का, बम का।''

   (क) लेखक ने इन पंक्तियों में किस वैश्विक समस्या की ओर संकेत किया है? यदि यह समस्या ऐसे ही बढ़ती रही तो उससे मानव के अस्तित्व को क्या–क्या खतरे हो सकते हैं?

   (ख) इन खतरों को दूर करने के लिए विश्व स्तर पर क्या–क्या निर्णय लेने होंगे?

EAY3AT

भाषा के बारे में

1. निम्नलिखित दोनों वाक्यों को ध्यान से पढ़िए और समझिए–

   (क) मैं मेहनतकश मजदूर हूँ।

   (ख) मैंने वहाँ भी गोरी दुनिया का पेट भरा।

   वाक्य 'क' को पढ़ने से आप पायेंगे कि उसका अर्थ आसानी से समझ आता है। इस प्रकार जिस वाक्य का साधारण शाब्दिक अर्थ और भावार्थ समान हो उसे **'अभिधा' शब्द शक्ति** कहते हैं। इससे उत्पन्न भाव को 'वाच्यार्थ' भी कहते हैं।

   वाक्य 'ख' में गोरी दुनिया अर्थात् गोरी रंग की दुनिया की बात न होकर, गोरे लोगों की दुनिया अर्थात् यूरोप को लक्ष्य कर बात कही गयी है। इसमें शब्द के वाच्यार्थ या मुख्यार्थ से भिन्न उसका अन्य अर्थ प्रकट होता है। इसमें उत्पन्न भाव को **'लक्ष्यार्थ'** कहा जाता है और इस शब्द शक्ति को **'लक्षणा'** कहते हैं।

निम्नलिखित वाक्यों में किस शब्द शक्ति का प्रयोग हुआ है, पहचानकर लिखिए—

(क) रमेश के कान नहीं है।
(ख) सीता गीत गाती है।
(ग) मोहन बैल है।
(घ) हमारी मिलों ने क्रांति की।
(ङ) चौकन्ना रहना अच्छी बात है।

योग्यता विस्तार

1. मिस्र स्थित गीज़ा का पिरामिड संसार के सात आश्चर्यों में से एक है जिसके निर्माण के समय ज्यादा सुविधा युक्त उपकरण एवं संसाधन न होते हुए भी मजदूरों के अथाह परिश्रम का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। ये सात आश्चर्य कौन—कौन से हैं? इनके बारे में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
2. अपने आसपास रहने वाले किसी मजदूर से बातचीत करके उसकी पूरे दिन की दिनचर्या के बारे में पता कीजिए।
3. मजदूरों का जीवन स्तर ऊँचा उठाने के लिए सरकार द्वारा क्या—क्या योजनाएँ बनाई गई है? चर्चा करके सूची तैयार कीजिए।

EB7YCG

पाठ में आए विविध स्थानों के बारे में थोड़ा और पढ़िए—

गीजा

विश्व के सात आश्चर्यों में से एक, मिस्र के पिरामिड के लिए प्रसिद्ध स्थल, गीजा के पिरामिड। सर्वाधिक प्राचीन, भव्य और अत्यधिक उन्नत तकनीक से बने इन पिरामिडों को लगभग ढ़ाई हजार वर्ष ईसा पूर्व बनाया गया था। 450 फीट की ऊँचाई तक अत्यंत विशाल पत्थरों को कैसे पहुँचाया गया होगा, यह आज भी नहीं जाना जा सका है। मानवीय श्रम का अद्भुत उदाहरण जो ऐसे युग में बना जब मशीनें नहीं हुआ करती थीं।

सक्कारा

मिस्र स्थित इस स्थल पर भी प्राचीन पिरामिडों के अवशेष हैं। सक्कारा के पिरामिड सीढ़ीदार हैं जबकि गीजा के समतल पार्श्व वाले त्रिभुजाकार हैं।

कोलोसियम

रोम के इटली शहर स्थित इस 'रंगशाला' को ईस्वी सन् 70 में रोम के शासकों ने बनाया था जो स्थापत्य कला का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण था। यहाँ योद्धा अपनी युद्ध कला और मल्ल विद्या का प्रदर्शन करते थे। हिंसक पशुओं से भी उनके मुकाबले आयोजित किए जाते थे। अब यह खंडहर रूप में पर्यटकों के लिए एक दर्शनीय स्थल है।

कोलार

भारत के कर्नाटक राज्य में स्थित यह स्थान बैंगलोर से 60 मील की दूरी पर है। यहाँ सोने की खाने हैं।

EBGUE4

पाठ – 2.2

जनतंत्र का जन्म

रामधारी सिंह 'दिनकर'

जीवन परिचय

आधुनिक युग के वीर रस के श्रेष्ठ कवि के रूप में स्थापित रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 23 सितम्बर 1908 को बिहार के मुँगेर जिले के सिमरिया घाट में हुआ था। वे बिहार विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक व विभागाध्यक्ष रहे। उन्होंने भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार (1965 से 1971 तक) के रूप में भी कार्य किया। वे छायावादोत्तर कवियों में पहली पीढ़ी के माने जाते हैं। उनकी कविताओं में ओज, आक्रोश व क्रान्ति की पुकार है। उन्हें राष्ट्रकवि कहे जाते हैं। उनकी प्रमुख कृतियाँ ***कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, संस्कृति के चार अध्याय, परशुराम की प्रतीक्षा, आत्मजयी*** *व* ***उर्वशी*** *आदि रही हैं। उन्हें अपनी रचनाओं के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार व भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया, उन्हें पद्म विभूषण की उपाधि से भी अलंकृत किया गया।*

सदियों की ठंडी– बुझी राख सुगबुगा उठी,
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है,
दो राह, समय के रथ का घर्घर नाद सुनो,
सिहांसन खाली करो कि जनता आती है।

जनता? हाँ मिट्टी की अबोध मूरतें वही,
जाड़े– पाले की कसक, सदा सहने वाली,
जब अंग–अंग में लगे साँप हों चूस रहे,
तब भी न कभी मुँह खोल दर्द सहने वाली।

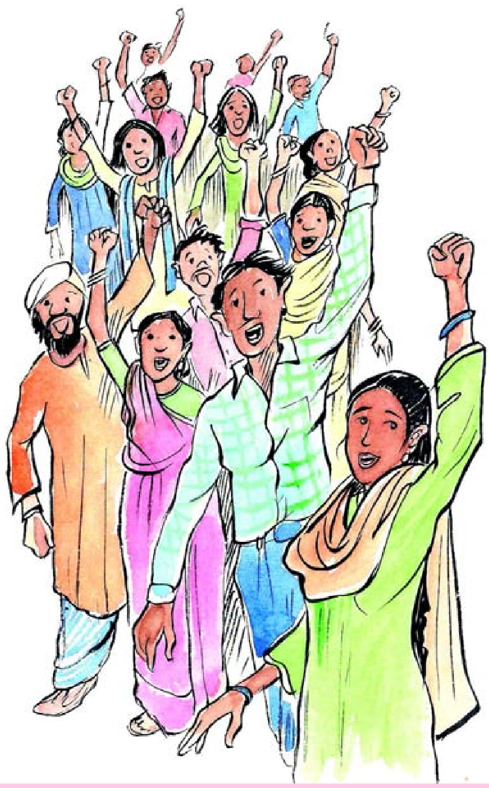

जनता? हाँ, लम्बी–बड़ी जीभ की वही कसम,
''जनता सचमुच ही बड़ी वेदना सहती है।''
सो ठीक, मगर आखिर इस पर जनमत क्या है?
है प्रश्न गूढ़; जनता इस पर क्या कहती है?

मानो, जनता हो फूल जिसे एहसास नहीं,
जब चाहो तभी उतार सजा लो दोनों में;
अथवा कोई दुधमुहीं जिसे बहलाने के
जंतर–मंतर सीमित हो चार खिलौनों में।

लेकिन होता भूडोल, बवंडर उठते हैं,
जनता जब कोपाकुल हो भृकुटी चढ़ाती है,
दो राह, समय के रथ का घर्घर नाद सुनो,
सिहांसन खाली करो कि जनता आती है।

हुंकारों से महलों की नींव उखड़ जाती,
साँसों के बल से ताज़ हवा में उड़ता है
जनता की रोके राह समय में ताब कहाँ?
वह जिधर चाहती, काल उधर ही मुड़ता है।

अब्दों, शताब्दियों, सहस्त्राब्द का अंधकार
बीता, गवाक्ष अंबर के दहके जाते हैं,
यह और नहीं कोई जनता के स्वप्न अजय
चीरते तिमिर का वक्ष उमड़ते जाते हैं।

सबसे विराट् जनतंत्र जगत् का आ पहुँचा,
तैंतीस कोटि–हित, सिंहासन तैयार करो;
अभिषेक आज राजा का नहीं प्रजा का है,
तैंतीस कोटि जनता के सिर पर मुकुट धरो।

आरती लिए तू किसे ढूँढता है मूरख,
मंदिरों, राज प्रासादों में, तहखानों में?
देवता कहीं सड़कों पर गिट्टी तोड़ रहे
देवता मिलेंगे, खेतों में, खलिहानों में।

फावड़े और हल राजदंड बनने को हैं,
धूसरता सोने से शृंगार सजाती है,
दो राह, समय के रथ का घर्घर नाद सुनो,
सिहांसन खाली करो कि जनता आती है।

शब्दार्थ

नाद = आवाज, **अबोध** = अज्ञान मूर्ख, **कसक** = पीड़ा, **गूढ़** = गुप्त, छिपा हुआ **जंतर–मंतर** = यंत्र मंत्र (जादू टोना), **कोपाकुल** = क्रोध से व्याकुल, **भृकुटी** = भौहें , **काल** = मृत्य,समय **अब्दों** = वर्षों, **शताब्दियों** = सैकड़ों वर्षों, **सहस्त्राबद** = हजार वर्ष, **अंधकार** = **अंधेरा** , **गवाक्ष** = खिड़की, **दहके** = आग से जलने की क्रिया, **तिमिर** = अंधेरा, **विराट्** = बहुत बड़ा, **प्रासादों** = महलों।

अभ्यास

पाठ से

1. 'अभिषेक आज राजा का नहीं प्रजा का है' यह किस अवसर के लिए कहा गया है?
2. जब जनता की भौंहे क्रोध में तन जाती हैं तो क्या–क्या होता है?
3. बदली हुई परिस्थितियों में अब राजदण्ड किसे बनाया जाएगा और क्यों?
4. जनता की सहनशीलता के कवि ने क्या–क्या उदाहरण दिए हैं?
5. कवि ने गिट्टी तोड़नेवालों और खेतों में काम करने वालों को देवता क्यों कहा है?
6. कवि ने जनता के लिए सिहांसन खाली कर देने के लिए क्यों कहा है?
7. जगत का सबसे विराट जनतंत्र किसे कहा गया है?

पाठ से आगे

EBQQFR

1. 'अंग–अंग में लगे साँप हों चूस रहे' पंक्ति में जनता के किस प्रकार के शोषण की ओर संकेत किया गया है? आपके मत में यह शोषण किन–किन के द्वारा होता रहा होगा?

2. (क) किसी भी लोकतांत्रिक देश में नागरिकों का जागरुक होना क्यों आवश्यक है? अपने विचार लिखिए।

(ख) आपके गाँव/मोहल्ले के लोगों में किस–किस तरह की चेतना जगाने की ज़रूरत है? उदाहरण सहित लिखिए।

(ग) इन्हें जागरूक करने के लिए क्या–क्या प्रयास करने होंगे?

भाषा के बारे में

EBZLHE

1. निम्नांकित शब्दों के क्या अर्थ हैं? इन्हें ध्यान से पढ़कर उनके अर्थ लिखिए। आप इसमें शब्दकोश की भी मदद ले सकते हैं?

नाद, गूढ़, भृकुटी, बवंडर, अब्द, गवाक्ष, तिमिर, अम्बर, प्रासाद, धूसरता।

2. नीचे दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखिए और वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) ठंडी बुझी राख का सुगबुगाना।

(ख) भृकुटी चढ़ाना।

(ग) हवा में ताज उड़ना।

(घ) सिर पर मुकुट धरना।

(ङ) आरती लिए ढूँढ़ना।

(च) सिंहासन खाली करना।

3. निम्न शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

(क) वेदना (ख) सीमित (ग) तिमिर (घ) प्रासाद

समास

दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से जब एक नया शब्द बनता है तो उसे सामासिक शब्द और इस प्रक्रिया को समास कहते हैं।

समास के प्रकार

(1) तत्पुरुष समास – जब किसी शब्द में पूर्व पद गौण तथा उत्तरपद प्रधान होता है तो वहाँ तत्पुरुष समास होता है। ये संज्ञा और संज्ञा के मिलने से तथा संज्ञा और क्रिया मूलक शब्दों के मिलने

से बनते हैं। जैसे– स्नानगृह (स्नान के लिए गृह) हस्तलिखित (हस्त द्वारा लिखित)। इनके समस्तपद बनते समय विभक्ति चिह्नों का लोप हो जाता है तथा इसके विपरीत समास विग्रह करते समय विभक्ति चिह्नों– से, पर, को, द्वारा, का, के लिए आदि का प्रयोग किया जाता है।

तत्पुरुष समास के उपभेद (प्रकार) – तत्पुरुष समास के दो उपभेद हैं–

(क) कर्मधारय तथा (ख) द्विगु कर्मधारय (तत्पुरुष) समास –

(क) इसमें पूर्वपद विशेषण और उत्तरपद विशेष्य होता है। पूर्वपद तथा उत्तरपद में उपमेय उपमान संबंध भी हो सकता है।

विशेषण विशेष्य

जैसे– पीतांबर, महाविद्यालय, नीलगाय।

उपमेय और **उपमान** – घनश्याम, कमलनयन, चंद्रमुख।

(ख) **द्विगु समास** – द्विगु समास में भी उत्तरपद प्रधान होता है और विशेष्य होता है जबकि पूर्वपद संख्यावाची विशेषण होता है।

जैसे– पंचवटी, तिराहा, शताब्दी, चौमासा आदि।

(2) बहुब्रीहि समास – जिस सामासिक शब्द में आए दोनों ही पद गौण होते हैं और दोनों मिलकर किसी तीसरे पद के विषय में कुछ कहते हैं और यह तीसरा पद ही 'प्रधान' होता है।

जैसे– नीलकंठ – नीला है कंठ जिसका अर्थात् शंकर

दशमुख – दश मुख वाला अर्थात् रावण

चतुर्भुज – चार भुजाएँ है जिसकी अर्थात् विष्णु

(3) द्वंद्व समास – जिस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं उसे द्वंद्व समास कहते हैं। इसमें दोनों पद को जोड़नेवाले अव्यय – 'और', 'या' का लोप हो जाता है। जैसे–

राजा – रानी राजा और रानी

पति – पत्नी पति और पत्नी

हार – जीत हार या जीत/हार और जीत

दूध – दही दूध और दही।

(4) अव्ययी भाव समास – जिस समास में पूर्वपद अव्यय हो उसे अव्ययी भाव समास कहते हैं।

जैसे– प्रतिदिन, यथाशक्ति, आमरण बेखटके

द्विगु और बहुब्रीहि समास में अंतर–द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है और दूसरा पद उसका विशेष्य परंतु बहुब्रीहि समास में पूरा पद ही विशेषण का काम करता है।

कई ऐसे उदाहरण हैं जिन्हें दोनों समासों के अंतर्गत रखा जा सकता है। जैसे–

चतुर्भुज – चार भुजाओं का समूह (द्विगु)

चार भुजाएँ हैं जिसकी (बहुब्रीहि)

इसी तरह त्रिनेत्र, चतुर्भुख। तीन आँखों का समूह तथा चार मुखों का समूह (द्विगु समास) जबकि त्रिनेत्र – तीन नेत्र हैं अर्थात् शिव तथा चार मुख है जिनके अर्थात् ब्रह्मा (बहुब्रीहि समास) में लेंगे, यानी इनके विग्रह पर निर्भर करता है कि इन्हें किस समास के अंतर्गत रखा जाएगा।

4. पाठ में आए इन शब्दों का समास विग्रह कर समासों के नाम लिखिए–

   – कोपाकुल, राजप्रासाद, जनतंत्र, कोटिहित, जनमत
   – ठंडी–बुझी, जंतर–मंतर, जाड़े–पाले
   – सहस्राब्द, शताब्दी
   – दुधमुँही, गूढ़प्रश्न

EC9HJ2

योग्यता विस्तार

1. रामधारी सिंह 'दिनकर' की कुछ अन्य रचनाएँ खोजकर पढ़िए।
2. जनतंत्र का जन्म 'ओज' गुण की कविता है। 'ओज' वीर रस का ही गुण है। वीर रस की कोई अन्य कविता ढूँढ़कर कक्षा में उसका वाचन कीजिए।
3. इन कवियों के बारे में बताइए कि ये मुख्यत: किस रस की कविता के लिए जाने जाते हैं। इस हेतु पुस्तकालय एवं अपने शिक्षक की सहायता लीजिए।

   (क) सूरदास　　(ख) कबीरदास　　(ग) विद्यापति

   (घ) काका हाथरसी　　(ङ) भूषण

ECIDKP

अपनी–अपनी बीमारी

हरिशंकर परसाई

जीवन परिचय

हिन्दी साहित्य जगत के मुर्धन्य व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त, 1924 को जमानी गाँव, जिला होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) में हुआ। उन्होंने कई कॉलेजों एवं स्कूलों में अध्यापन के साथ–साथ जबलपुर से निकलने वाली साहित्यिक पत्रिका 'वसुधा' का प्रकाशन–संपादन किया। सामाजिक व राजनैतिक विषयों पर तीखा व्यंग्य रचने वाले परसाई जी की प्रमुख साहित्यिक कृतियाँ– **हँसते हैं रोते हैं, भूत के पाँव पीछे, सदाचार का ताबीज, रानी नागफनी की कहानी, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, बोलती रेखाएँ, तट की खोज, माटी कहे कुम्हार से, विकलांग श्रद्धा का दौर** आदि है।

हम उनके पास चंदा माँगने गए थे। चंदे के पुराने अभ्यासी का चेहरा बोलता है। वे हमें भाँप गए। हम भी उन्हें भाँप गए। चंदा माँगवानेवाले और देनेवाले एक–दूसरे के शरीर की गंध बखूबी पहचानते हैं। लेनेवाला गंध से जान लेता है कि यह देगा या नहीं। देनेवाला भी माँगनेवाले के शरीर की गंध से समझ लेता है कि यह बिना लिए टल जाएगा या नहीं। हमें बैठते ही समझ में आ गया कि ये नहीं देंगे। वे भी शायद समझ गए कि ये टल जाएंगे। फिर भी हम दोनों पक्षों को अपना कर्तव्य तो निभाना ही था। हमने प्रार्थना की तो वे बोले– आपको चंदे की पड़ी है, हम तो टैक्स के मारे मर

रहे हैं। सोचा, यह टैक्स की बीमारी कैसी होती है। बीमारियाँ बहुत देखी हैं– निमोनिया, कालरा, कैंसर; जिनसे लोग मरते हैं। मगर यह टैक्स की कैसी बीमारी है जिससे वे मर रहे थे! वे पूरी तरह से स्वस्थ और प्रसन्न थे। तो क्या इस बीमारी में मजा आता है? यह अच्छी लगती है जिससे बीमार तगड़ा हो जाता है। इस बीमारी से मरने में कैसा लगता होगा?

अजीब रोग है यह। चिकित्सा–विज्ञान में इसका कोई इलाज नहीं है। बड़े से बड़े डॉक्टर को दिखाइए और कहिए– यह आदमी टैक्स से मर रहा है। इसके प्राण बचा लीजिए। वह कहेगा– इसका हमारे पास कोई इलाज नहीं है। लेकिन इसके भी इलाज करनेवाले होते हैं मगर वे एलोपैथी या होमियोपैथी पढ़े नहीं होते। इसकी चिकित्सा पद्धति अलग है। इस देश में कुछ लोग टैक्स की बीमारी से मरते हैं और काफी लोग भुखमरी से।

टैक्स की बीमारी की विशेषता यह है कि जिसे लग जाए वह कहता है– हाय, हम टैक्स से मर रहे हैं। और जिसे न लगे वह कहता है– हाय, हमें टैक्स की बीमारी ही नहीं लगती। कितने लोग हैं जिनकी महत्त्वाकांक्षा होती है कि टैक्स की बीमारी से मरें पर मर जाते हैं निमोनिया से। हमें उन पर दया आई। सोचा, कहें कि प्रापर्टी समेत यह बीमारी हमें दे दीजिए। पर वे नहीं देते। यह कमबख्त बीमारी ही ऐसी है कि जिसे लग जाए उसे प्यारी हो जाती है।

मुझे उनसे ईर्ष्या हुई। मैं उन जैसा ही बीमार होना चाहता हूँ। उनकी तरह ही मरना चाहता हूँ। कितना अच्छा होता अगर शोक–समाचार यों छपता– 'बड़ी प्रसन्नता की बात है कि हिंदी के व्यंग्य लेखक हरिशंकर परसाई टैक्स की बीमारी से मर गए। वे हिंदी के प्रथम लेखक हैं जो इस बीमारी से मरे। इस घटना से समस्त हिंदी संसार गौरवान्वित है। आशा है आगे भी लेखक इसी बीमारी से मरेंगे। मगर अपने भाग्य में यह कहाँ? अपने भाग्य में तो टुच्ची बीमारियों से मरना लिखा है।

उनका दुख देखकर मैं सोचता हूँ, दुख भी कैसे–कैसे होते हैं। अपना–अपना दुख अलग होता है। उनका दुख था कि टैक्स मारे डाल रहा है। अपना दुख है कि प्रापर्टी नहीं है जिससे अपने को भी टैक्स से मरने का सौभाग्य प्राप्त हो। हम कुल 50 रुपये चंदा न मिलने के दुख में मरे जा रहे थे।

मेरे पास एक आदमी आता था जो दूसरों की बेईमानी की बीमारी से मरा जाता था। अपनी बेईमानी प्राणघातक नहीं होती बल्कि संयम से साधी जाए तो स्वास्थ्यवर्द्धक होती है। वह आदर्श प्रेमी आदमी था। गांधीजी के नाम से चलनेवाले किसी प्रतिष्ठान में काम करता था। मेरे पास घंटों बैठता और बताता कि वहाँ कैसी बेईमानी चल रही है। कहता, युवावस्था में मैंने अपने को समर्पित कर दिया था। किस आशा से इस संस्था में गया और क्या देख रहा हूँ। मैंने कहा– भैया, युवावस्था में जिनने समर्पित कर दिया वे सब रो रहे हैं। फिर तुम आदर्श लेकर गए ही क्यों? गांधीजी दुकान खोलने का आदेश तो मरते–मरते दे नहीं गए थे। मैं समझ गया उसके कष्ट को। गांधीजी का नाम प्रतिष्ठान में जुड़ा होने के कारण वह बेईमानी नहीं कर पाता था और दूसरों की बेईमानी से बीमार था। अगर प्रतिष्ठान का नाम कुछ और हो जाता तो वह भी औरों जैसा करता और स्वस्थ रहता। मगर गांधीजी ने उसकी जिंदगी बरबाद की थी। गांधीजी विनोबा जैसों की जिंदगी बरबाद कर गए। बड़े–बड़े दुख हैं। मैं बैठा

हूँ। मेरे साथ 2–3 बंधु बैठे हैं। मैं दुखी हूँ! मेरा दुख यह है कि मुझे बिजली का 40 रुपये का बिल जमा करना है और मेरे पास इतने रुपए नहीं हैं।

तभी एक बंधु अपना दुख बताने लगता है। उसने 8 कमरों का मकान बनाने की योजना बनाई थी। 6 कमरे बन चुके हैं। 2 के लिए पैसे की तंगी आ गई है। वह बहुत–बहुत दुखी है। वह अपने दुख का वर्णन करता है। मैं प्रभावित नहीं होता। मगर उसका दुख कितना विकट है कि मकान को 8 कमरों का नहीं रख सकता। मुझे उसके दुख से दुखी होना चाहिए पर नहीं हो पाता। मेरे मन में बिजली के बिल के 40 रुपये का खटका लगा है।

दूसरे बंधु पुस्तक–विक्रेता हैं। पिछले साल 50 हजार की किताबें पुस्तकालयों को बेची थीं। इस साल 40 हजार की बिकीं। कहते हैं– बड़ी मुश्किल है। सिर्फ 40 हजार की किताबें इस साल बिकीं। ऐसे में कैसे चलेगा? वे चाहते हैं, मैं दुखी हो जाऊँ पर मैं नहीं होता। इनके पास मैंने अपनी 100 किताबें रख दी थीं। वे बिक गईं। मगर जब मैं पैसे माँगता हूँ तो वे ऐसे हँसने लगते हैं जैसे मैं हास्यरस पैदा कर रहा हूँ। बड़ी मुसीबत है व्यंग्यकार की। वह अपने पैसे माँगे तो उसे भी व्यंग्य–विनोद में शामिल कर लिया जाता है। मैं उनके दुख से दुखी नहीं होता।

मेरे मन में बिजली कटने का खटका लगा हुआ है। तीसरे बंधु की रोटरी मशीन आ गई। अब मोनो मशीन आने में कठिनाई आ गई है। वे दुखी हैं। मैं फिर दुखी नहीं होता। अंततः मुझे लगता है कि अपने बिजली के बिल को भूलकर मुझे इन सबके दुख में दुखी हो जाना चाहिए। मैं दुखी हो जाता हूँ। कहता हूँ– क्या ट्रेजडी हैं मनुष्य–जीवन की कि मकान कुल 6 कमरों का रह जाता है। और कैसी निर्दय यह दुनिया है कि सिर्फ 40 हजार की किताबें खरीदती है। कैसा बुरा वक्त आ गया है कि मोनो मशीन ही नहीं आ रही है।

वे तीनों प्रसन्न हैं कि मैं उनके दुःखों से आखिर दुखी हो ही गया। तरह–तरह के संघर्ष में तरह–तरह के दुख हैं। एक जीवित रहने का संघर्ष है और एक संपन्नता का संघर्ष है। एक न्यूनतम जीवन–स्तर न कर पाने का दुख है, एक पर्याप्त संपन्नता न होने का दुख है। ऐसे में कोई अपने टुच्चे दुखों को लेकर कैसे बैठे?

मेरे मन में फिर वही लालसा उठती है कि वे सज्जन प्रापर्टी समेत अपनी टैक्सों की बीमारी मुझे दे दें और मैं उससे मर जाऊँ। मगर वे मुझे यह चांस नहीं देंगे। न वे प्रापर्टी छोड़ेंगे, न बीमारी, और मुझे अंततः किसी ओछी बीमारी से ही मरना होगा।

अभ्यास

पाठ से

1. 'बीमारी' शब्द को लेखक ने किन–किन संदर्भों में प्रयोग किया है?
2. पाठ में दिया गया शोक समाचार – ''बड़ी प्रसन्नता की बात है... से क्यों शुरू हुआ है?'' अपना तर्क दीजिए।

3. ''गांधीजी विनोबा जैसों की जिन्दगी बरबाद कर गए'' इस पंक्ति का आशय क्या है? लिखिए।
4. टैक्स को 'बीमारी' के रूप में देखने का क्या आशय है?
5. लेखक टैक्स की बीमारी को क्यों अपनाना चाहता है?

पाठ से आगे

ECS9HC

1. 'सबका दुख अलग–अलग होता है', किस–किस तरह के दुख के अनुभव आपने किए हैं? उन्हें लिखिए।
2. अपने परिवार के सभी लोगों से उनके दुःख पूछिए और लिखिए। यह भी बताइए कि आप उनके लिए क्या कर सकते हैं कि उनके दुख दूर हों।
3. अक्सर लोग अपनी बुनियादी जरूरतों के रहते हुए भी और ज्यादा की चाह करते रहते हैं। पाठ में भी एक–दो ऐसे दुखी लोगों के उदाहरण दिए हुए हैं। आपके अपने अनुभव में भी कुछ उदाहरण होंगे। उनके बारे में लिखिए।

भाषा के बारे में

ED25NZ

1. कई बार किसी बात को सीधे न कहकर कुछ इस अंदाज में प्रस्तुत किया जाता है कि अर्थ सीधे उस वाक्य में न होकर कहीं और होता है। जैसे इस पाठ में ही 'टैक्स के मारे मर रहे हैं;' 'बेइमानी की बीमारी से मर रहे हैं;' वाक्य आए हैं। इनका अर्थ अगर सीधे शब्दों से लें तो अनर्थ हो सकता है। यहाँ 'मर रहे हैं' का अर्थ मृत्यु न होकर दुखी व विचलित होना है।

इस पाठ से ऐसे अंश ढूँढिए जिनके सामान्य अर्थ और समझे जाने वाले वाक्य अर्थ में अंतर है।

वाक्य	वाक्य अर्थ

2. किसी अखबार से समाचार, विज्ञापन, शोक संदेश, लेख व संपादकीय की एक–एक कतरन निकालिए। और उसे भाषा, वाक्य संरचना, शब्द चयन और अर्थ की दृष्टि से पढ़िए। शिक्षक की मदद से उनके फर्क पहचानिए एवं अपने विश्लेषण को सारणी के रूप में प्रस्तुत कीजिए।

प्रायोजना–कार्य

1. टैक्स क्या होता है? यह क्यों लगाया जाता है? इसके निर्धारण के क्या आधार हैं एवं एक सामान्य व्यक्ति को किस–किस प्रकार के टैक्स अदा करने पड़ते हैं? सामाजिक विज्ञान (अर्थशास्त्र) के शिक्षक के सहयोग से इसके बारे में जानने–समझने का प्रयास करें।

EDB1QH